श्रद्धेय गुरुवर

जहां सुतावत दूधी मिलती
जननी सम रेवा से,
स्थल वह दीप्तिमान है गुरुकृत
मानवता सेवा से ।
वैसे तो हैं भारत भू पर
बहुसः सरिता संगम,
कितने में पाते दुर्लभ शम
अनायास जड़ जंगम । 1 ।

एक शिखर शिवज्ञान राजता
हरि अनुराग अपर पर,
आत्मबोध संपन्न सुशोभित
ऋषि द्वय पूत उभय पर ।
धार मौन चिरकाल मननरत
तपोनिष्ठ व्रतधर ने,
अव्याख्येय परतत्व यही था
जतलाया गुरुवर ने । 2 ।

यहां सरस्वति सम बहती सी
लगे तृतीया धारा,
गुरुवर कृपा अदृश्य सरित सी
देती अघ छुटकारा ।
मोहड़ नहीं मोह हर कहना
इसको घाट उचित है,
क्योंकि मोहनिशि नाशक गुरूकृत
तपोराशि संचित है । 3 ।

किया सत्य प्रकटित स्वनाम से
शील मूल है ऋत का,
यही साधना और तपस्या
साधन सकल सुकृत का ।
जो चाहे आनंद शील का
करे यत्न से पालन,
होगा संभव संस्कारों की
रज का तब प्रक्षालन । 4 ।

अनासक्ति, आस्तिक्य, अनारत
मन वपु का अनुशासन,
अध्यवसाय अक्लांत, असंशय
धृत मति में गुरु शासन।
कर देती कृतार्थ निश्चय ही
नर को जितभय जितभव,
गुरु अनुकंपा से ही संभव
भव में प्रीति समुद्भव । 5 ।

शिष्य वृद्धि में नहीं, शिष्य की
उन्नति में थी निष्ठा,
तृणवत समझी सदा उन्होंने
सब जागतिक प्रतिष्ठा ।
नहीं बनाए आश्रम बहुशः
करीं न बहु शाखाएं,
लगते थे उनको आडंबर
मात्र लोक बाधाएं । 6 ।

नहीं ज्ञान या वाणी वैभव
का कुछ किया प्रदर्शन,
मितभाषी थे कुछ शब्दों में
करते तत्व निदर्शन ।
करुणा सुधा वृष्टि सब पर ही
समता से होती थी,
थे विरक्त पर कभी न ममता
दीनों प्रति सोती थी । 7 ।

थे विराट आध्यात्म शिखर से
निस्पृह और अमानी,
हितसाधक सर्वत्र, श्रेय से
दूर छिपे विज्ञानी ।
क्षुद्र सिद्धि दर्शक निजघोषक
जग में हैं बहुतेरे,
जगत भूतिरत मौन, शिष्य के
उन्नायक न घनेरे । 8 ।

बनी रहे तव कृपा बड़ी ही

करुणा कर अपनाया,

जगमाया उदभ्रांत तप्तजन

को शुभ शीतल छाया।

केवल देते तीर्थ हरिकृपा

से जो लभ्य मही पर,

जो दे सकते ज्ञान, तत्व है

सब में, अभी, यहीं पर । 9 ।

---- इति ----

भोपाल

19 मार्च 2023

शिव कुमार मिश्र